International Journal of Trend in Scientific Research and Development (IJTSRD)
Volume 6 Issue 4, May-June 2022 Available Online: www.ijtsrd.com e-ISSN: 2456 – 6470

परिवार का भविष्य

डॉ. महेश कुमार गर्ग
सहायक आचार्य, समाजशास्त्र, राजकीय महाविद्यालय सपोटरा, जिला करौली, राजस्थान

सार

समाजऔर देश की महत्वपूर्ण इकाई परिवार होता है। परिवार का भविष्य संतानों के संस्कार और उनकी परवरिश पर ही निर्भर करता है। संतान परिवार की संपत्ति होता है। यह बात पंडित सुरेश चंद्र त्रिवेदी ने कहीं। वे शहर के एरियापति हनुमान मंदिर परिसर में चल रही सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भागवत ज्ञान गंगा महोत्सव में प्रवचन दे रहे थे। उन्होंने कहा कि अपना परिवार बढ़ाना या संतान पैदा करना सिर्फ व्यक्तिगत ही नहीं बल्कि सामाजिक दृष्टि से भी उतना ही महत्वपूर्ण है। संस्कारवान संतान से ही देश का सही निर्माण हो सकेगा। पंडित सुरेश चंद्र त्रिवेदी ने कहा कि बच्चों के लालन-पालन के लिए सिर्फ सुख और सुविधाओं की ही आवश्यकता नहीं होती। अभावों में भी बच्चों को अच्छे संस्कार दिए जा सकते हैं। जब संतानें संस्कारवान और सभ्य होंगी तो परिवार सफल होगा। महाभारत में कौरव महलों की सुख-सुविधाओं में पले थे और पांडव जंगल में। फिर भी पांडव नायक हुए और कौरव खलनायक। अपने बच्चों को हमेशा हर चीज सुलभ ना कराएं, कभी-कभी अभावों में भी जीना सिखाएं। पारिवारिक व्यक्ति और समाज के बीच का संबंध है: पारिवारिक संरचना में परिवर्तन और संरचना सामाजिक परिवर्तन से संचालित होती है, और साथ ही, सामाजिक बदलाव चलाते हैं-यही वजह है कि सेक्स और विवाह किया गया है, और अब भी हैं, इसलिए कसकर नियंत्रित और विनियमित ऐतिहासिक रूप से, कैथोलिक यूरोप में निश्चित रूप से, विवाहित होने और एक परिवार की स्थापना का प्राथमिक उद्देश्य एक वैध पुरुष वारिस का निर्माण करना था व्यभिचार, विशेष रूप से पत्नी की ओर से, गंभीर रूप से स्वीकृत किया गया था, और हालांकि, चर्च ने तलाक नहीं पहचाना, एक शादी नपुंसकता या बांझपन के आधार पर रद्द की जा सकती है. आचार्य चाणक्य ने अपने नीतिशास्त्र में मनुष्य जीवन व घर-परिवार को संभालने के लिए बहुत सारी जानकारी दी है। इनके द्वारा बताए गए उपाय को अपनाने वाला व्यक्ति जीवन की कठिनाइयों को आसानी से पार कर सकता है। आचार्य चाणक्य ने अपने नीति शास्त्र में घर के मुखिया के लिए भी कई बातें बताई हैं।

How to cite this paper: Dr. Mahesh Kumar Garg "Future of Family" Published in International Journal of Trend in Scientific Research and Development (ijtsrd), ISSN: 2456-6470, Volume-6 | Issue-4, June 2022, pp.1434-1439, URL: www.ijtsrd.com/papers/ijtsrd50328.pdf

IJTSRD50328

Copyright © 2022 by author(s) and International Journal of Trend in Scientific Research and Development Journal. This is an Open Access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY 4.0) (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0)

परिचय

उन दिनों में, शादी तब थी, क्योंकि यह अभी भी कुछ संस्कृतियों, एक सामाजिक गठबंधन में है, जिसमें बहुत कम या रोमांस या लैंगिक संगतता है जो आधुनिक विवाह को संचालित करती है। आज भी, परिवार, प्रजनन आमंत्रित करता है, जबकि एक ही समय में यौन समारोह को विनियमित करते हैं, और आर्थिक, मानव और सांस्कृतिक राजधानी के मुक्त प्रवाह के लिए संरचना और माध्यम प्रदान करते हैं।[1] यह अगली पीढ़ी को सामूहीकरण और सशक्त करने के लिए मजबूत मानव प्रवृत्ति का समर्थन करता है, और जितनी अच्छी हो सकती है, सभी सदस्यों की शारीरिक और मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं, आश्रय के लिए, देखभाल के लिए और प्यार के लिए। सामान्य तौर पर, परिवार इन कार्यों को राज्य के मुकाबले बेहतर करता है, और कम लागत पर। यह सबसे अच्छा है, परम सुरक्षा नेट मीडिया में अक्सर परिवार में जो मॉडल होता है, वह एक सफेद, विषमलैंगिक जोड़ी होता है, जो एक ही छत के नीचे एक साथ दो स्वस्थ, सुखी बच्चों के साथ रहते हैं। इस अनाज के पैकेट परिवार में पुरुष और महिला दोनों परंपराओं के बीच चल रहे रोमांस पर बने एक शादी में हैं। आदमी मुख्य व्यस्क व्यक्ति है, और, extremis में, निर्णय निर्माता और अनुशासनात्मक वह 'परिवार का प्रमुख' है इस बीच, महिला अपने आप को घर और बच्चों को समर्पित करती है अगर वह काम करती है, तो आदमी का करियर प्राथमिकता लेता है आदमी और महिला का समर्थन और एक दूसरे के पूरक वे प्रत्येक अतिरिक्त संसाधन को अपने बच्चों में निवेश करते हैं, जो बदले में, उनकी उच्च स्थिति और अच्छे चरित्र को सत्यापित करते हैं।

सभी समाजों में बच्चों का जन्म और पालन पोषण परिवार में होता है। बच्चों का संस्कार करने और समाज के आचार व्यवहार में उन्हें दीक्षित करने का काम मुख्य रूप से परिवार में होता है। इसके द्वारा समाज की सांस्कृतिक विरासत एक से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित होती है। व्यक्ति की सामाजिक मर्यादा बहुत कुछ परिवार से ही निर्धारित होती है। नर-नारी के यौन संबंध मुख्यत: परिवार के दायरे में निबद्ध होते हैं। औद्योगिक सभ्यता से उत्पन्न जनसंकुल समाजों और नगरों को यदि छोड़ दिया जाए तो व्यक्ति का परिचय मुख्यत: उसके परिवार और कुल के आधार पर होता है। संसार के विभिन्न प्रदेशों और विभिन्न कालों में यद्यपि रचना, आकार, संबंध और कार्य की दृष्टि से परिवार के अनेक भेद हैं

किंतु उसके यह उपर्युक्त कार्य सार्वदेशिक और सार्वकालिक हैं। उसमें देश, काल, परिस्थिति और प्रथा आदि के भेद स एक या अनेक पीढ़ियों का और एक या अनेक दंपतियों अथवा पति-पत्नियों के समूहों का होना संभव है, उसके सदस्य एक पारिवारिक अनुशासन व्यवस्था के अतिरिक्त पति और पत्नी, भाई और बहन, पितामह और पौत्र, चाचा और भतीजे, सास और पुत्रवधू जैसे संबंधों तथा कर्तव्यों एवं अधिकारों से परस्पर आबद्ध, अन्य सामाजिक समूहों के संदर्भ में एक घनिष्टतम अंतरंग समूह के रूप में रहते हैं। परिवार के दायरे में स्त्री और पुरुष के बीच कार्यविभाजन भी सार्वत्रिक और सार्वकालिक है। स्त्रियों का अधिकांश समय घर में व्यतीत होता है। भोजन बनाना, बच्चों की देख रेख और घर की सफाई करना और कपड़ों की सिलाई आदि ऐसे काम हैं जो स्त्री के हिस्से में आते हैं। पुरुष बाहरी तथा अधिक श्रम के कार्य करता है, जैसे खेती, व्यापार, उद्योग, पशुचारण, शिकार और लड़ाई आदि। तब भी यह कार्यविभाजन सब समाजों में एक सा नहीं है, कोई बड़ी सामान्य सूची भी बनाना कठिन है क्योंकि कई समाजों में स्त्रियाँ भी खेती और शिकार जैसे कामों में हिस्सा लेती हैं। परिवार को सेंट जॉर्ज से विरासत में मिला है और सार्वभौमिक विवाह शहादत आदमी महिला और बच्चे और भगवान द्वारा चुनी गई भविष्यवाणियों की अवधारणा विरासत में मिली है। जीवन दिन का प्रकाश सूर्य का रात का चंद्रमा अंधेरा का अंधेरा मौत नींद और आत्मा की आत्महत्या और आत्मा कोमा मानव और सभी जीवित प्राणी के रूपों पृथ्वी बलिदान जीवित और मानव प्राणियों में समय अंतरिक्ष समय पृथ्वी पर सभी बुद्धिमान जीवन के तीन तरीके और परिवार की अवधारणाएं हैं जो आज दुनिया के पैर हैं।[2]

अनाज पैकेट परिवार एक परम्परागत परिवार की मूलरूप है जो कुछ और उनके आश्रित बच्चों के साथ है। परिवार का अन्य मुख्य प्रकार पैट्रिलोकल विस्तारित परिवार है, जो व्यक्ति के परिवार के साथ या उसके पास के सह-निवास की विशेषता है। विस्तारित परिवार अधिक सामान्य होते थे, हालांकि, पूर्व-औद्योगिक ब्रिटेन में, देर से विवाह और कम जीवन की उम्मीदों ने उन्हें परमाणु परिवारों के वंशानुगत होने से रोका। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद परमाणु परिवार की प्रतिष्ठा और पूर्व-प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई क्योंकि कार्यबल अधिक मोबाइल बन गया और विशेष एजेंसियों ने विस्तारित परिवार के कई पारंपरिक कार्यों, विशेष शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, और कल्याण में अधिक काम किया।

लेकिन हाल के दशकों में, परमाणु परिवार, और विशेष रूप से अनाज-पैकेट परिवार, तनाव में वृद्धि के साथ आ गया है। महिलाएं पहले से कहीं ज्यादा सशक्त हैं, और अक्सर परिवार में मुख्य कमाई होती हैं, साथ ही पुरुष पार्टनर घर पर रहना या बराबर के रिश्ते की स्थापना करना। अधिक लोग समझौता और स्थिरता के ऊपर जुनून और पूर्ति कर रहे हैं, जिससे सीरियल मोनोगैमी हो जाती है, जो अब कलंकित नहीं है। स्वैच्छिक निपुणता अधिक आम है, और प्रजनन तकनीक में विकास उन लोगों के लिए अधिक विकल्प पैदा कर रहे हैं, जो बच्चों को अधिक परंपरागत व्यवस्था से बाहर रखना चाहते हैं। इसी समय, बढ़ती ट्यूशन फीस और संपत्ति की कीमतें, और कल्याणकारी राज्य की वापसी जैसी आर्थिक शक्तियां, विस्तारित परिवार सहित परिवार पर जिम्मेदारी वापस ले जा रही हैं, जो जीवन की अपेक्षाओं की बढ़ोतरी और आसान यात्रा और संचार द्वारा समर्थित हैं, एक वापसी का कुछ कर रहा है. अनाज पैकेट परिवार में अपने ही विनाश का बीज था। आज से कहीं ज्यादा, लोग रोमांस का पीछा कर रहे हैं और इस प्रक्रिया में अस्थिरता पैदा कर रहे हैं। वर्षों में उच्च तलाक दरों ने अकेले माता-पिता की संख्या में बढ़ोतरी की है और परिवारों को पुनर्गठन किया है। जीवन की अपेक्षाओं की बढ़ती सहायता से, आर्थिक और सामाजिक शक्तियां विस्तारित परिवार में जिम्मेदारी वापस ले जा रही हैं, और साथ ही बुजुर्गों के बीच अकेलेपन की महामारी को कम करने में मदद करते हैं। युवा लोग विवाह के प्रति सहानुभूति का चयन कर रहे हैं, और एक लंबा जीवनकाल के दौरान भागीदारी करने के लिए अधिक धारावाहिक या कार्य-प्रेरित दृष्टिकोण के साथ-साथ विवाह को खत्म करने के लिए सहवास के पराजित स्वरूप की कल्पना करना संभव है। पुरुष और महिला के बीच संबंध बराबरी में से एक है, हालांकि यह विशेष रूप से एकमात्र पैरेंट परिवारों से बहुत स्पष्ट है कि महिला अभी भी बाल-व्यवसाय के थोक में कर रही है। अधिक से अधिक लोग एक चाइल्डफ्री जीवन का चयन कर रहे हैं, या बच्चों को एक और परंपरागत व्यवस्था से बाहर कर रहे हैं, और इन दोनों प्रवृत्तियों को जारी रखने के लिए प्रतीत होता है। यह अभी भी समान संबंधों के लिए शुरुआती दिनों है, जो अधिक सामान्य हो सकते हैं क्योंकि लिंग और कामुकता अधिक द्रव और पुराने संबंधों के लिए कम रिश्तेदार होते हैं और प्रजनन के लिए एक अनिवार्य होते हैं।

कामकाजी और जिम्मेदार व्यक्ति होने के नाते हम अपने और परिवार को अच्छी जिंदगी देने के लिए कमाते हैं। हमारी गैर-मौजूदगी में भी उन्हें एक आरामदायक जिंदगी मिल सके, इसके लिए हम कई उपाय करते हैं। हमारे फाइनैंशल लक्ष्य उनकी इच्छाओं और भावी जरूरतों को ध्यान में रखकर तय होते हैं। लेकिन इन सबके लिए काफी प्लानिंग करनी पड़ती है। आज हम आपको पांच ऐसे तरीके बताने जा रहे हैं जिनकी मदद से आप अपने परिवार के लिए अपनी अच्छी फाइनैंशल प्लानिंग कर सकते हैं।[3]

जिंदगी का कोई भरोसा नहीं है। इसलिए सबसे पहले आपको उन लोगों को सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त इंश्योरेंस खरीदना चाहिए जो आर्थिक रूप से आप पर निर्भर हैं। बाजार में कई तरह के इंश्योरेंस प्लान मौजूद हैं और उनमें से प्रत्येक प्लान एक खास जरूरत को पूरा करता है। उदाहरण के लिए एक टर्म इंश्योरेंस पॉलिसी आपकी मौत के बाद आपके परिवार को इंश्योरेंस की रकम देकर उनकी मदद करती है। इसी तरह आपको बिन बताए आने वाली मेडिकल इमर्जेंसी से निपटने के लिए एक हेल्थ इंश्योरेंस भी खरीदना चाहिए। अपने परिवार की मेडिकल जरूरतों को पूरा करने के लिए आपको एक उचित फैमिली फ्लोटर प्लान लेना चाहिए क्योंकि यह एक सिंगल प्लान में कई तरह के फायदे देता है जिससे एक से अधिक इंश्योरेंस पॉलिसी लेने और संभालने की परेशानी से छुटकारा मिल जाता है।

मुख्य बातें

- घर के मुखिया में पूरे परिवार को साथ लेकर चलने का होना चाहिए गुण
- मुखिया के लिए अपने भाई-बंधु से अच्छा रिश्ता बनाना बेहद जरूरी
- मुखिया को परिवार के बेहतर भविष्य के लिए फिजूलखर्ची से बचना चाहिए

विचार-विमर्श

मानव सभ्यता की पहली संस्कृति पवित्र जॉर्ज मैं भगवान के साथ बना रहा था परिवार के भाग्य दिन का भाग्य रात की नींद सपने की नींद आदमी औरत में तीन मानव ressures और एण्ड्रोजन माँ Androjan mammy महिला बच्चे और archet पिता पिता पुरुष बच्चे और रात की किस्मत चंद्रमा छाया अंधेरा है और यह परिवार के सूर्य के प्रकाश के दिन का भाग्य बनाता है क्योंकि यह सार्वभौमिक रूप से एकजुट होता है। विवाह के रूपों से परिवार के रूपों का घनिष्ट संबंध है। लेविस मार्गन आदि विकासवादियों का मत है कि मानव समाज की प्रारंभिक अवस्था में विवाह प्रथा नहीं थी और पूर्ण कामाचार प्रचलित था। इसके बाद सामाजिक विकासक्रम में यूथ विवाह (कई पुरुषों और कई स्त्रियों का सामूहिक रूप से पति पत्नी होना), बहुपतित्व, बहुपत्नीत्व और एकपत्नीत्व या एकपतित्व की अवस्था आई। वस्तुत: बहुविवाह और एकपत्नीत्व की प्रथा असभ्य और सभ्य सभी समाजों में पाई जाती है। अत: यह मत साक्ष्यसंमत नहीं प्रतीत होता। मानव शिशु के पालन पोषण के लिए लंबी अवधि अपेक्षित है और पहले बच्चें की बाल्यावस्था में ही अन्य छोटे बच्चे उत्पन्न होते रहते हैं। गर्भावस्था और प्रसूतिकाल में माता की देख-रेख आवश्यक है। फिर, पशुओं की भाँति मनुष्य में रति की कोई विशेष ऋतु नहीं है। अत: संभवत: मानव समाज के प्रारंभ में या तो पूरा समुदाय या फिर पति पत्नी तथा बच्चों का समूह ही परिवार था।

मानव वैज्ञानिकों को कोई ऐसा समाज नहीं मिला जहाँ विवाह संबंध परिवार के अंदर ही होते हों, अत: पितृस्थानीय परिवार में पत्नी को और मातृस्थानीय परिवार में पति को अतिरिक्त सदस्यता प्रदान की जाती है। युगल परिवार में पति और पत्नी मिलकर अपनी पृथक् गृहस्थी स्थापित करते हैं। किंतु अधिकांश समाजों में यह परिवार बृहत्तर कौटुंबिक समूह का अंग माना जाता है और जीवन के अनेक प्रसंगों में परिवार पर बृहत्तर कौटुबिक समूह का, घनिष्ट संबध के अतिरिक्त, नियंत्रण होता है। अमरीका जैसे उद्योगप्रधान देशों में कुटुंबियों के सम्मिलित परिवार के स्थान पर युगल परिवार की बहुलता हो गई है। यद्यपि वहाँ का समाज पितृवंशीय है, फिर भी युगल परिवार वहाँ किसी एक बृहत्तर कुटुंब का अंग नहीं माना जाता। युगल परिवार में पति पत्नी और, पैदा होने पर, उनके अविवाहित बच्चे होते हैं। सम्मिलित परिवारों में इनके अतिरिक्त विवाहित बच्चे और उनकी संतान, विवाहित भाई अथवा बहन और उनके बच्चे साथ रह सकते हैं। सम्मिलित परिवार में रक्त संबंधियों की परिधि भिन्न भिन्न समाजों में भिन्न भिन्न है। भारत जैसे देश में एक सम्मिलित परिवार में साधारणत: 10-12 सदस्य होते हैं, किंतु कुछ परिवारों में सदस्यों की संख्या 50-60 या 100 तक होती है।[4]

विवाह, वंशावली, स्वामित्व और शासनाधिकार के विभिन्न रूपों के आधार पर परिवारों के विभिन्न रूप और प्रकार हो जाते हैं। मातृस्थानीय परिवार में पति अपनी पत्नी के घर का स्थायी या अस्थायी सदस्य बनता है, जबकि पितृस्थानीय परिवार में पत्नी पति के घर जाकर रहती है। मातृस्थानीय परिवार साधारणत: मातृवंशीय और पितृस्थानीय परिवार पितृवंशीय होते हैं। बहुधा परिवार की संपत्ति का स्वामित्व पितृस्थानीय परिवार में पुरुष को और मातृस्थानीय परिवार में नारी को प्राप्त है। प्राय: संपत्ति का उत्तराधिकारी ज्येष्ठ संतान होती है। किंतु यह आवश्यक नहीं है। भारत की गारो जैसी जनजाति में सबसे छाटी लड़की ही पारिवारिक संपत्ति की स्वामिनी होती है। अनेक समाजों में परिवार के सभी स्त्री या पुरुष सदस्यों में स्वमित्व निहित होता है और कुछ में पुरुष तथा स्त्री दोनों को संपत्ति का उत्तराधिकार प्राप्त है। परिवार का शासन अधिकांश समाजों में पुरुषों के हाथ होता है। अंतर इतना है कि पितृवंशीय परिवारों में साधारणत: पिता अथवा घर का सबसे बड़ा पुरुष और मातृवंशीय परिवारों में मामा या माता का अन्य सबसे बड़ा रक्तसंबंधी (पुरुष) घर का मुखिया होता है। अत: संसार के अधिकांश भागों में और समाजों में पुरुष की प्रधानता पाई जाती है।

संसार में दांपत्य जीवन में प्राय: एकपत्नीत्व ही सबसे अधिक प्रचलित है, यद्यपि अनेक समाजों में पुरुषों को एक से अधिक पत्नियाँ रखने की भी छूट है। इसके विपरीत टोडा और खस जनजातियों में और तिब्बत के कुछ प्रदेशों में बहुपति प्रथा तथा एक प्रकार के यूथ विवाह की प्रथा है। इसी प्रकार भारत में खासी, गारो और अमरीका में होपी, हैडिया जैसी जनजातियाँ भी हैं जो मातृस्थानीय और मातृवंशीय हैं। विवाह के इन रूपों में परिवार की रचना और स्वरूप में अंतर पड़ जाता है।

आधुनिक औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप परिवार की रचना और कार्यों में गंभीर परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। पहले सभी समाजों में परिवार समाज की सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक संस्था थी। जीवन का अधिकांश व्यापार परिवार के माध्यम से संपन्न होता था। इन औद्योगिक समाजों में परिवार अब उत्पादन की इकाई नहीं है। बच्चों के शिक्षण का कार्य शिक्षण संस्थाओं ने लिया है। रसोई का कार्य व्यावसायिक भोजनालयों तथा जलपानगृहों में चला गया है। मनोरंजन के लिए पृथक् संगठन स्थापित हो गए हैं। सामाजिक सुरक्षा का उत्तरदायित्व राज्य के पास चला गया और धर्म के घटते हुए प्रभाव के कारण धार्मिक कृत्यों का स्थान गौण को गया है। पति और पत्नी का अधिकांश समय घर के बाहर व्यतीत होता है। फिर भी परिवार बना हुआ है और उसके द्वारा कुछ महत्वपूर्ण कार्य संपन्न होते हैं, जिन्हें परिवार का स्थायी या अवशिष्ट कार्य कहा जाता है।

भारत मुख्यतः कृषिप्रधान देश है और यहाँ की पारिवारिक रचना प्राय: कृषि की आवश्यकताओं से प्रभावित है। इसके अतिरिक्त भारतीय परिवार की मर्यादाएँ और आदर्श परंपरागत है। किसी अन्य समाज़ में गृहस्थ जीवन की इतनी पवित्रता तथा पिता, पुत्र भाई भाई और पति पत्नी के इतने स्थायी संबंधों का उदाहरण नहीं मिलता। यद्यपि विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों और जतियों में सांपत्तिक अधिकार, विवाह तथा विवाहविच्छेद आदि की प्रथा की दृष्टि से अनेक भेद पाए जाते हैं तथापि संयुक्त परिवार का आदर्श सर्वमान्य है। संयुक्त परिवार में संबंधियों का दायरा पति, पत्नी तथा उनकी अविवाहित संतानों से भी अधिक व्यापक होता है। बहुधा उसमें तीन पीढ़ियों और कभी कभी इससे भी अधिक पीढ़ियों के व्यक्ति एक घर में एक ही अनुशासन में और एक

रसोईघर से संबंध रखते हुए सम्मिलित संपत्ति का उपभोग करते हैं और परिवार के धार्मिक कृत्यों तथा संस्कारों में भाग लेते हैं। यद्यपि मुसलमानों और ईसाइयों में संपत्ति के नियम भिन्न हैं, तथापि संयुक्त परिवार के आदर्श, परंपराएँ और प्रतिष्ठा के कारण इन सांपत्तिक अधिकारों का व्यावहारिक पक्ष परिवार के संयुक्त रूप के अनुकूल ही रहता है। संयुक्त परिवार का मूल भारत की कृषिप्रधान अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त प्राचीन परंपराओं तथा आदर्श में है। रामायण और महाभारत की गाथाओं द्वारा यह आदर्श जन जन तक पहुँचते हैं। कृषि ने सर्वत्र ही पारिवारिक जीवन की स्थिरता प्रदान की है। अत: भारतीय समाज में परंपरा से उत्पादन कार्य, उपभोग और सुरक्षा की बुनियादी इकाई परिवार है।[5]

अपवादों को छोड़कर भारतीय समाज पितृवंशीय, पितृस्थानीय और पितृभक्त है। यहाँ पुरुष की अपेक्षा नारी का दर्जा हीन माना जाता है। संपत्ति पर नारी का बहुत सीमित अधिकार माना गया है। फिर भी, गृहस्थी के अनेक मामलों में उसकी महत्ता स्वीकृत है। साधारणत: एक विवाह की मान्यता है। किंतु पुरुष को एकाधिक विवाह करने का अधिकार है। परंपरागत आदर्श के अनुसार विधवा विवाह का निषेध है, किंतु विधुर विवाह कर सकता है। पतिव्रता धर्म की बहुत महिमा है। पितर पूजा का भी भारी महत्व है। उच्च जातियों को छोड़कर अन्य सभी जातियों में प्राय: विवाह विच्छेद और विधवा विवाह प्रचलित है। परंतु जब कोई जाति अपनी मर्यादा को ऊँचा करना चाहती है तो इन दोनों प्रथाओं का निषेध कर देती है। घर का सबसे अधिक वयोवृद्ध पुरुष, यदि वह कार्यनिवृत्त न हो गया हो तो संयुक्त परिवार का कर्ता अथवा मुखिया होता है। कहीं कहीं उसे मालिक (स्वामी) भी कहते हैं। यह कर्ता अन्य वयोवृद्ध या वयस्क सदस्यों की सलाह से या उसके बिना ही परंपरा के आधार पर परिवार में कार्यविभाजन, उत्पादन, उपभोग आदि की व्यवस्था करता है और परिवार तथा उसके सदस्यों से संबधित सामाजिक महत्व के प्रश्नों का निर्णय करता है। घर की सबसे वयोवृद्ध नारी परिवार के महिला वर्ग की मुखिया होती है और जो कार्य महिलाओं के सुपुर्द है उनकी देखरेख तथा व्यवस्था करती है। भोजन तैयार करना बच्चों का पालन पोषण करना तथा कताई आदि महिलाओं के मुख्य काम हैं। यों वे खेती के या व्यवसाय के कुछ मामूली कार्यों में भी हाथ बँटाती हैं। संयुक्त परिवार में चाचा, ताऊ की विवाहित संतान और उसके विवाहित पुत्र, पौत्र आदि भी हो सकते हैं। साधारणतया पिता के जीवन में उसके पुत्र परिवार से अलग होकर स्वतंत्र गृहस्थी नहीं बसाते, किंतु यह अभेद्य परंपरा नहीं है। ऐसा समय आता है जब रक्तसंबंधों की निकटता के आधार पर एक संयुक्त परिवार दो या अनेक संयुक्त अथवा असंयुक्त परिवारों में विभक्त हो जाता है। असंयुक्त परिवार भी कालक्रम में संयुक्त रूप ले लेता है और संयुक्त परिवार का क्रम बना रहता है।

परिवार में रहते हुए परिजनों के कार्यों का वितरण आसान हो जाता है . साथ ही भावी पीढ़ी को सुरक्षित वातावरण एवं स्वास्थ्य पालन पोषण द्वारा मानव का भविष्य भी सुरक्षित होता है उसके विकास का मार्ग प्रशस्त होता है . परिवार में रहते हुए ही भावी पीढ़ी को उचित मार्ग निर्देशन देकर जीवन स्ग्राग्राम के लिए तैयार किया जा सकता है . समाज में पहचान परिवार के माध्यम से मिलती है इसलिए हर मायने में व्यक्ति के लिए उसका परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। बचपन – हमारे लिए परिवार इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि परिवार हमारी पहली पहचान है, बाह्य शक्ति से (जो हमें हानि पहुंचा सकती है) परिवार हमारी ढ़ाल के रूप में रक्षा करता है। संयुक्त परिवार में बच्चों के लिए सर्वाधिक सुरक्षित और उचित शारीरिक एवं चारित्रिक विकास का अवसर प्राप्त होता है . बच्चे की इच्छाओं और आवश्यकताओं का अधिक ध्यान रखा जा सकता है . उसे अन्य बच्चों के साथ खेलने का मौका मिलता है . माता पिता के साथ साथ अन्य परिजनों विशेष तौर पर दादा ,दादी का प्यार भी मिलता है . परिवार द्वारा किये जाने वाले संतानोत्पत्ति के कार्य से ही समाज का अस्तित्व एवं निरंतरता बनी रहती है। परिवार संतानो को वैधता प्रदान करता है। परिवार अपने सदस्यों की शारीरिक रक्षा का कार्य भी संपन्न करता है। पालन-पोषण से लेकर बच्चे को सामाजिक प्राणी बनने तक संपूर्ण दायित्व परिवार द्वारा वहन किये जाते है। परिवार से इतर व्यक्ति का अस्तित्व नहीं है इसलिए परिवार को बिना अस्तित्व के कभी सोचा नहीं जा सकता। लोगों से परिवार बनता हैं और परिवार से राष्ट्र और राष्ट्र से विश्व बनता हैं। इसलिए कहा भी जाता है 'वसुधैव कुटुंबकम्' अर्थात पूरी पृथ्वी हमारा परिवार है। ऐसी भावना के पीछे परस्पर वैमनस्य, कटुता, शत्रुता व घृणा को कम करना है। कभी, घर और उन के शिक्षण संस्थानों के बीच ज़्यादा दूरी होती है. तो कभी घर और दफ़्तर के बीच ज़्यादा फ़ासला कारण बनता है. हालांकि, परिवार से अलग रहने के बाद भी ये युवा पारिवारिक दायित्वों की डोर से बंधे रहते हैं. भारतीय समाज में पारिवारिक मूल्यों में बदलाव लाने में एक और बात ने अहम भूमिका निभाई है. परिवार (family) साधारणतया पति, पत्नी और बच्चों के समूह को कहते हैं, किंतु दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलित वासवाले रक्त संबंधियों का समूह है जिसमें विवाह और दत्तक प्रथा स्वीकृत व्यक्ति भी सम्मिलित हैं।[6]

अपने परिवार के लिए एक इमर्जेंसी फंड भी तैयार करके रखना चाहिए जो आपकी फाइनैंशल प्लानिंग लिस्ट का एक मुख्य आइटम होना चाहिए। कोई आपातकालीन परिस्थिति पैदा हो जाने और तुरंत पैसे की जरूरत पड़ने पर यह इमर्जेंसी फंड काफी मददगार साबित होता है। आपका इमर्जेंसी फंड कोई इन्वेस्टमेंट नहीं है बल्कि यह एक ऐसा फंड है जो तत्काल जरूरत के दौरान आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। इस फंड में कम से कम इतना पैसा तो होना ही चाहिए कि उससे आपके 6 से 12 महीने का ख़र्च चल सके। आप इस फंड का निर्माण करने के लिए किसी सेविंग्स बैंक अकाउंट, रेकरिंग डिपोजिट या लिक्विड म्यूचुअल फंड में पैसे निवेश कर सकते हैं।

अपने परिवार के लिए एक इमर्जेंसी फंड भी तैयार करके रखना चाहिए जो आपकी फाइनैंशल प्लानिंग लिस्ट का एक मुख्य आइटम होना चाहिए। कोई आपातकालीन परिस्थिति पैदा हो जाने और तुरंत पैसे की जरूरत पड़ने पर यह इमर्जेंसी फंड काफी मददगार साबित होता है। आपका इमर्जेंसी फंड कोई इन्वेस्टमेंट नहीं है बल्कि यह एक ऐसा फंड है जो तत्काल जरूरत के दौरान आर्थिक सुरक्षा प्रदान करता है। इस फंड में कम से कम इतना पैसा तो होना ही चाहिए कि उससे आपके 6 से 12 महीने का ख़र्च चल सके। आप इस फंड का निर्माण करने के लिए किसी सेविंग्स बैंक अकाउंट, रेकरिंग डिपोजिट या लिक्विड म्यूचुअल फंड में पैसे निवेश कर सकते हैं।

यह एक बहुत बढ़िया विकल्प है यदि आप लम्बे समय तक पैसे जमा करके एक बड़ी रकम तैयार करना चाहते हैं। म्यूचुअल फंड में निवेश करने के कई विकल्प मौजूद हैं, चाहे एक बड़ी रकम तैयार करनी हो, लिक्विड सेविंग करनी हो, या टैक्स सेविंग। लेकिन इस माध्यम से निवेश करने से पहले, इससे जुड़े सभी पहलुओं पर विचार करें और उन्हें अच्छी तरह समझने की कोशिश करें। एक फाइनैंशल अडवाइजर की मदद लेने की कोशिश करें जो आपकी जरूरतों का मूल्यांकन कर सके और सही तरह के फंड में निवेश करने में आपकी मदद कर सके।[7]

आप सिस्टमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (SIP) में निवेश कर सकते हैं जो कुछ समय तक नियमित रूप से कुछ पैसे निवेश करके अनुशासित तरीके से एक बड़ी रकम तैयार करने की सुविधा प्रदान करता है। म्यूचुअल फंड में निवेश करते समय, अपने परिवार के लिए अधिक से अधिक पैसे जमा करने के लिए जल्द से जल्द शुरुआत करनी चाहिए और लम्बे समय तक निवेशित रहना चाहिए। उदाहरण के लिए, एक 25 साल के व्यक्ति द्वारा 12 प्रतिशत वार्षिक दर से हर महीने 5,000 रु. निवेश करने पर उसे 45 साल का होने पर 49 लाख रुपये मिल सकते हैं।

आचार्य चाणक्य ने अपने नीति शास्त्र में जीवन व घर-परिवार को संभालने के लिए बहुत सारी जानकारी दी है। उन्होंने मनुष्य जीवन में सफलता प्राप्त करने से लेकर किसी भी समस्या को खत्म करने के कई उपाय बताएं हैं। आचार्य चाणक्य ने अपने नीतिशास्त्र में उन नीतियों का भी जिक्र किया है, जो मनुष्य में अपने परिवार को चालने के लिए जरूरी होत हैं। नीतिशास्त्र में घर के मुखिया के लिए कुछ ऐसी बातें भी बताई गई हैं, जो उनके लिए जरूरी होती हैं।

भाई के साथ अच्छा संबंध बनाना

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि, घर के मुखिया की जिम्मेदारी होती है कि वो अपने भाई-बंधुओं से अच्छे रिश्ते बनाए रखे। अगर परिवार का मुखिया अपने भाई व परिवार के अन्य लोगों से संबंध अच्छे नहीं बना पाएगा तो पूरे परिवार में तनाव का माहौल बना रहेगा और नेतृत्व पर भी सवाल खड़े होंगे। इसलिए सबको साथ लेकर चलने का गुण घर के मुखिया में होना चाहिए।

अन्न का सम्मान करने का गुण

आचार्य चाणक्य के अनुसार, किसी भी परिवार में छोटे बच्चे वही सीखते हैं जो वो अपने बड़ों को करते देखते हैं। इसलिए, घर के मुखिया को कभी भी अन्न की बर्बादी नहीं करनी चाहिए। क्योंकि, आपको ऐसा करते देखकर बच्चे भी अन्न का अपमान करेंगे। इससे घर से सुख-समृद्धि दूर हो जाएगी। मुखिया को हमेशा अन्न का सम्मान करना चाहिए और दूसरे लोगों को भी यह सिखाना चाहिए।

A. परिवार के हर सदस्य से बात करें

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि, यह मुखिया की जिम्मेदारी होती है कि वो अपने परिवार के सभी सदस्यों से बात करता रहे। जब मुखिया परिवार के लोगों से बात करेगा, तभी वह उसको अपनी समस्याएं बता सकेंगे और साथ बैठकर उसका हल निकालने की कोशिश करेंगे। मुखिया को अपने परिवार के सभी सदस्यों से हर मुद्दे पर खुलकर बातचीत करनी चाहिए।

B. फिजूलखर्ची न करें

आचार्य चाणक्य कहते हैं कि, परिवार का मुखिया हमेशा अपने परिवार व बच्चों के भविष्य की चिंता करके चलने वाला होना चाहिए। परिवार के अनुसार भविष्य की योजनाएं बनानी चाहिए। घर के मुखिया को फिजूलखर्ची से जितना हो सके उतना बचना चाहिए। जिससे भावी पीढ़ी के लिए बचत हो सके और उनकी जरूरतों की पूर्ति हो सके।

परिणाम

संयुक्त परिवारप्रणाली यद्यपि बहुत प्राचीन है, तथापि इसके आंतरिक स्वरूप में बहिर्विवाह, उत्तराधिकार तथा सांपत्तिक अधिकार के नियमों में, कालक्रम में परिवर्तन होता रहा है। औद्योगिक क्रांति ने पाश्चात्य देशों में परंपरागत संयुक्त परिवार भंग कर दिया है जिसका कारण बढ़ते हुए यंत्रीकरण के फलस्वरूप व्यक्ति को परिवार से बाहर मिली आजीविका सुरक्षा और उन्नति की सुविधाओं को बताया जाता है। भारत में भी औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप नई अर्थव्यवस्था और नए औद्योगिक तथा आर्थिक संगठनों का आरंभ हो चुका है। यातायात तथा संचार के नए साधन उपलब्ध हो रहे हैं और नगरीकरण तीव्रता से हो रहा है। पाश्चात्य विचारधारा और पाश्चात्य ढंग की शिक्षा दीक्षा तथा आदर्शों का प्रभाव भी कम नहीं है। विशेषकर स्वाधीनता के बाद विवाह, उत्तराधिकार, दत्तकग्रहण और सांपत्तिक अधिकार के संबंध में जा कानून लागू किए गए हैं उन्हें परिवार की संयुक्त प्रणाली के लिए हानिकारक समझा जाता है। इसी प्रकार आयकर के नियम भी इसके प्रतिकूल पड़ते हैं। वयस्क मताधिकार राजनीतिक लोकतंत्र भी संयुक्त परिवार के एकसत्तात्मक तथा व्यष्टिपरक अस्तित्व पर प्रहार कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में जब अर्थव्यवस्था और उत्पादन के साधनों में भी बुनियादी परिवर्तन हो रहा है, परिवार के शासन, रचना और कार्यों में हेरफेर होना अवश्यंभावी है और वह परिलक्षित भी हो रहा है। किंतु अभी यह कहना कठिन है कि परिवार का संयुक्त रूप समाप्त हो रह है। नगरों और ग्रामों में संयुक्त परिवार पहले से कम हो गए हैं, इसका कोई प्रमाण नहीं है। परिवर्तन के संबंध में विद्वानों में मुख्यत: दो प्रकार का विचार है। एक विचार के अनुसार परिस्थिति के प्रभावस्वरूप परिवार में कतिपय परिवर्तन होने पर भी उसका संयुक्त रूप नष्ट नहीं हो रहा है। दूसरे विचार के अनुसर औद्योगिक सभ्यता भारत में भी संयुक्त परिवार को बहुत कुछ उसी युगल परिवार के रूप में उपस्थित करेगी जो अमरीका तथा यूरोप में प्रादुर्भूत हुआ है। वर्तमान पारिवारिक विघटन एंव परिवर्तनों को इस प्रक्रम की आरंभिक अवस्था बताया जाता है।[8]

भारत के मालावार प्रदेश में नायर और तिया जाति में मातृ स्थानीय तथा मातृवंशी परिवार हाल तक रहा है। ऐसे परिवारों में पति अपने बच्चों के घर में एक अस्थायी आगंतुक होता है। उसके बच्चों की देखभाल उसका मामा करता है और उसके बच्चे अपनी माँ के परिवार का नाम ग्रहण करते हैं। परिवार का रूप संयुक्त है, जिसमें माँ की और उसकी पुत्री अथवा पौत्रियों की संतान होती है। इन परिवारों में घर का मुखिय मातृपक्षीय पुरुष होता है। असम राज्य के गारो और खासी जनजातियों में भी मातृवंशीय और मातृस्थानीय परिवार की प्रथा है। उत्तर प्रदेश के जौनसार बाबर में खस नाम की जनजाति में और आस पास के कुछ क्षेत्रों में बहुपति प्रथा है। परिवार में सब भाइयों की एक पत्नी

और कभी-कभी एकाधिक सामूहिक पत्नियाँ हेती हैं। नीलगिरि की टोडा जनजाति में भी बहुपति प्रथा है, किंतु यहाँ एक स्त्री के पतियों में भाइयों के अतिरिक्त अन्य व्यक्ति भी हो सकते हैं। गैर जनजातीय समाज में कहीं भी बहुपति प्रथा नहीं मिलती।

परिवार एक बृहत परिवार है जिसमे कई सदस्य होते है। यह कम से कम दो या दो से अधिक प्राथमिक परिवारो का संग्रह है। संयुक्त परिवार मे साधारणतया पिता, उसके लड़के-लड़कियाँ, चाची तथा उनके लड़के-लड़कियां सम्मिलित होते है अथवा माता-पिता, उनका विवाहित लड़का या लड़के और उनके बच्चे होते है। संयुक्त परिवार में माता-पिता, भाई-बहन के अतिरिक्त चाचा, ताऊ की विवाहित संतान, उनके विवाहित पुत्र, पौत्र आदि भी हो सकते हैं। साधारणत: पिता के जीवन में उसका पुत्र परिवार से अलग होकर स्वतंत्र गृहस्थी नहीं बसाता है। यह अभेद्य परंपरा नहीं है, कभी-कभी अपवाद भी पाये जाते हैं।

एक जिम्मेदार माता/पिता होने के नाते, आप बिना किसी आर्थिक बाधा के अपने बच्चे को अच्छी से अच्छी शिक्षा देना चाहेंगे। यदि आप जल्द से जल्द इसकी प्लानिंग शुरू कर दें तो पढ़ाई के पीछे पैसे खर्च करते समय आपके परिवार को बेकार की चिंता करनी नहीं पड़ेगी। इसके अलावा, एक उपयुक्त म्यूचुअल फंड में पैसे निवेश करने पर आपको सही समय पर अच्छा रिटर्न मिल सकता है। आप इक्विटी म्यूचुअल फंड में निवेश करने पर विचार कर सकते हैं जिन्होंने पिछले 10 साल में हर साल लगभग 12 से 15 प्रतिशत की दर से रिटर्न दिया है।

निष्कर्ष

संयुक्त परिवार में हो रहे परिवर्तनों के सन्दर्भ में यह प्रश्न महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि संयुक्त परिवार का क्या भविष्य है? क्या वास्तव में संयुक्त परिवार टूट रहा है? और, क्या संयुक्त परिवारों का स्थान पश्चिमी देशों में पाए जाने वाले एकाकी परिवार लेते जा रहे हैं? अधिकांश विद्वानों ने संयुक्त परिवार पर किए गए अध्ययनों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला है कि यद्यपि समकालीन भारत में संयुक्त परिवार छिन्न-भिन्न होकर एकाकी परिवारों का रूप ले रहे हैं और हमारी सामाजिक संरचना में उनका कोई विशेष स्थान नहीं है, तथापि वास्तविकता यह है कि आज भी संयुक्त परिवार हमारे देश में विद्यमान हैं और इनके छिन्न-भिन्न होने के निकट भविष्य में कोई आसार नहीं हैं। कृषि व्यवसाय, हिन्दू आदर्श तथा मनोवृत्तियाँ और विचार अभी भी संयुक्त परिवारों के पक्ष में हैं। वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए संयुक्त परिवार के भविष्य के विषय में दो विचारधाराएँ सामने आती हैं—प्रथम, संयुक्त परिवार का भविष्य उज्ज्वल है तथा द्वितीय, संयुक्त परिवार का भविष्य अन्धकारमय है। प्रथम विचारधारा के समर्थक के०एम० कपाडिया हैं। उनके मतानुसार, संयुक्त परिवार ने अभी तक जिस कष्टमय समय को पार किया है, उसका भविष्य बुरा नहीं है।" उन्होंने आगे कहा है, "हिन्दू मनोवृत्तियाँ आज भी संयुक्त परिवार के पक्ष में हैं। इसी कारण विधियों द्वारा संयुक्त परिवार का विनाश अहिन्दू समझा जाता है, क्योंकि वह हिन्दू पारिवारिक मनोवृत्तियों की अवहेलना करता है। इनके द्वारा मुम्बई में किए गए सर्वेक्षण से भी हमें यह पता चलता है। कि बहुमत (57%) लोग आज भी संयुक्त परिवार के पक्ष में हैं। इस मत को अधिकांश विद्वान् स्वीकार करते हैं। वास्तव में, संयुक्त परिवार परिवर्तित परिस्थितियों के अनुकूल अपने स्वरूप को बदल रहा है और इसका विघटन नहीं हो रहा है। आई०पी० देसाई भी इस विचारधारा के समर्थक हैं। उनका कहना है, "आज भी अधिकतर लोग संयुक्त पारिवारिक व्यवस्था को अच्छा समझते हैं और उसकी उपयोगिता से प्रभावित हैं।

आधुनिक युग में भी संयुक्त परिवार की महत्ता बढ़ती जा रही है और संयुक्त परिवार की भावना केवल अलग रहने से समाप्त नहीं हो जाती। दूसरी विचारधारा के समर्थकों का कहना है कि संयुक्त परिवारों का विघटन हो रहा है और उसका भविष्य अन्धकारमय है। उदाहरणार्थ कोलण्डा के अनुसार, अधिकांश भारत में संयुक्त परिवारों की संख्या कम होती जा रही है तथा उसमें विघटन हो रहा है। टी०बी० बॉटोमोर ने 1951 ई० की जनगणना रिपोर्ट के आधार पर इस बात को उल्लेख किया है कि संयुक्त परिवार में काफी परिवर्तन आए हैं। संयुक्त परिवार से पृथक् घर बसाने की प्रवृत्ति निरन्तर बढ़ती जा रही है। निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि यद्यपि संयुक्त परिवार का तीव्रता के साथ विघटन हो रहा है तथापि भारत में इसका समूल विनाश हो जाना स्वाभाविक दिखाई नहीं देता। एकाकी परिवारों की बढ़ती संख्या के आधार पर हम यह नहीं कह सकते कि आने वाले समय में भारतीय समाज में संयुक्त परिवार पूर्णतः विघटित हो जाएँगे।

एक शांतिपूर्ण रिटायरमेंट के लिए अपनी युवावस्था में ही अपने फाइनैंस की अच्छी तरह प्लानिंग करनी चाहिए। जल्द से जल्द निवेश करना शुरू करें। जरूरी रकम तैयार करने के लिए निवेश करने से पहले अपने और अपनी पत्नी के नियमित और मेडिकल खर्चों पर विचार करें। बेहतरीन परिणाम के लिए अपनी आमदनी वाले सालों के दौरान नियमित रूप से निवेश करें। रिटायरमेंट के लिए एक अच्छी रकम तैयार हो जाने से आपको अपने रिटायरमेंट के सालों में अपनी पैसों से जुड़ी जरूरतों के लिए अपने बच्चों पर निर्भर रहना नहीं पड़ेगा।[9]

संदर्भ

[1] अगर माँ बाप ने प्यार करना बंद किया तो क्या होगा - पढ़िए Archived 2020-02-20 at the Wayback Machine, 2001

[2] Family Research Laboratory, 1995

[3] Family evolution and contemporary social transformations [1] (A page of Estación de Economía Política), 2013

[4] Family Facts: Social Science Research on Family, Society & Religion (a Heritage Foundation site), 2011

[5] One Plus One, 2004

[6] Families Australia - independent peak not-for-profit organization, 1999

[7] United Families International International organization, 2003

[8] UN - Families and Development, 2004

[9] Family, marriage and "de facto" unions - vatican.va, 2004